

पाठ - 11 रहीम के दोहे

दोहे से:

उत्तर1: उदहारण वाले दोहे

तरवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति-संचहि सुजान॥
थोथे बादर क्वार वके, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात॥
धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह॥

कथन वाले दोहे

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह॥
कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

उत्तर2: क्वार के मास में गरजनेवाले बादल केवल गरजकर रह जाते हैं, बरसते नहीं हैं। ठीक उसी प्रकार जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं, वे केवल बड़बड़ाकर रह जाते हैं। इसलिए कवि ने क्वार के मास में गरजनेवाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से की है।

दोहे से आगे:

उत्तर1: (क) इस प्रकार की सच्चाई अपनाने से हमारे मन से लोभ की भावना नष्ट हो जाएगी और हम परोपकार की ओर अग्रसर होंगे।

(ख) इस सच्चाई को जीवन में उतार लेने से हमारे जीवन में सहनशीलता की भावना का जन्म होगा। हम सुख और दुःख दोनों को ही सहजता से लेंगे।

भाषा की बात

उत्तर1:

NCERT Solution

शब्द	शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप
बिपत्ति	विपत्ति
मछरी	मछली
बादर	बादल
सीत	शीत

उत्तर2: 1. संपत्ति संचहि सुजान।

2. काली लहर कल्पना काली, काल कोठरी काली।

3. चारु चंद्र की चंचल किरणें।
